व्यवसायिक निर्देशन की परिभाषा करते हुए हमने व्यव
निर्देशन के स्वरूप एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला है।

व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकता का एक महत्वपू
आधार व्यक्ति के बीच पाई जाने वाली विभिन्नता:
यदि सभी व्यक्ति समान होते तो निर्देशन एवं
व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकता नहीं पड़ती।
व्यवसायिक निर्देशन आवश्यकता के दूसरा आध
व्यवसायो की अनेक योग्यता है। इस प्रकार क
व्यवसाय किस व्यक्ति के लिए अनुरूप होगा। ए
निर्णय करने के लिए एक व्यवस्थित निर्देशन का
कार्यक्रम की आवश्यकता पड़ती है।

1. सफलता एवं संतोष के लिए → व्यक्ति के निजी जीवन
की सफलता एवं संतोष समाज की दृष्टि से भी
व्यवसायिक निर्देशन एक महत्वपूर्ण उपक्रम है। यदि
व्यक्ति का विकास समुचित रूप से होता है और उ
रुचि एवं क्षमता के अनुरूप व्यवसाय के कारण सफ
होती है तो उसे सर्वांगीण विकास प्राप्त करने एवं
जीवन बिताने में सफलता मिलती है। फलस्वरूप वह
समाज का अच्छा सदस्य बनता है। जीवन में
व्यक्ति इस प्रकार समंजस्य प्राप्त करते हैं ए
समाज के आर्थिक एवं सांस्कृतिक वृद्धि बढ़ती है

2. माननीय क्षमता एवं साधनों का उपयोग → मान
क्षमता एवं साधनों का समुचित उपयोग व्यवस्
व्यवसायिक निर्देशन के अभाव में नहीं हो सक
क्षमता एवं शक्ति का जितना अधिक नियोजित उ
हो सकेगा व्यक्ति एवं समाज की खुशहाली उ
अनुपात में संभव हो सकेगी।

3. बदलते समाज में अनुकूलन हेतु आज के निरंतर

मिश्रम

व्यवसायिक निर्देशन की पहले से
युग और समाज में व्यवसायिक निर्देशन की नित्य अभी खोजें ए
अधिक आवश्यकता है। ज्ञान की ही है उपयोग और
केवल परिस्थितियाँ तो बदली ही हैं उपस्थित होते हैं।
टेक्नोलॉजी में अभूतपूर्व परिवर्तन उपस्थित यंत्रीकरण के
मशीनों पर बढ़ती हुई निर्भरता, अंत्रीकम स्थितियों के संद
फलस्वरूप उत्पन्न कार्यों की नई स्थितियों और समाज की
में व्यवसायिक निर्देशन व्यक्ति और समाज व्यवसायिक निर्देशन
सहायता करता है। इस प्रकार व्यवसायिक अनुभव की जाति
की आवश्यकता मनोनेक दृष्टि से अनुभव

व्यवसायिक निर्देशन -
4. कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर व्यवसायिक निर्देशन -

शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकताय

या

शैक्षिक निर्देशन की दृष्टि से निर्देशन की आवश्यक

1. व्यक्ति विभिन्नता के अनुरूप शिक्षा का विकास

2. छात्र असंतोष की समस्या के समाधान की आव

3. अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान आवश्यकता

4. सार्थक पाठ्यक्रम का चयन।

5. शैक्षिक उपलब्धि का वांछित स्तर बनाये रखना।

6. सामाजिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता।

1. समुचित स्थानांतरण स्थापन स्थानापन का महत्व।

2. व्यक्ति की क्षमता एवं योग्यता के अनुरूप कार्य के अ प्राप्त होने का व्यक्ति एवं समाज की महत्व शांति, सुरक्षा एवं संतोष से गहन संबंध है। प्रगतिशील दे का विकास का यह एक प्रमुख कारण है। वहाँ मानवीय क्षमता के समुचित उपयोग पर पर्याप्त ध्य दिया जाता है। भारत देश में ऊँची नियोजन उचित नियोजन का सर्वथा अभाव रहा है कि ऊँचा शिक्षा ए प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत भी हमारे देश के अनेक प्रतिभाशाली छात्र रोजगार के लिए कई-कई वर्ष भटकते रहते हैं। इस दृष्टि से विदेशी छात्र सौभाग्यशाली है जिन्हें रोजगार प्राप्त होने तक रो भत्ता प्राप्त होता है। हमारे यहाँ व्यक्ति की योग्यत एवं शिक्षा का केवल अपमान करने का ही वाता उत्पन्न किया जाता है। यही कारण है कि देश मे

Scanned with CamScanner

असामाजिक कृतियों का ही विस्तार हो रहा है। देश के लिए अत्यंत सोचनीय स्थिति है कि जिन व्यक्तियों को लिपिक, सिपाही अथवा किराना व्यवसायी नहीं होना चाहिए उन्हें अध्यापक, Sub-Inspector अथवा बड़े उद्योगपतियों के रूप में कार्य करने का अवसर प्रदान करा दिया जाता है।

2. महिलाओं के व्यवसायिक समायोजन →

3. परिवार की परिवर्तित परिस्थितियाँ

4. उद्योग एवं श्रम की परिस्थितियाँ

5. जनसंख्या वृद्धि की समस्या

शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकतायें →

1. अपव्यय तथा अवरोधन को दूर करना → भारत में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर अधिक अपव्यय होता है। भारतीय संविधान के अनुसार 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बालकों के लिए शिक्षा अनिवार्य की गई है लेकिन अधिकांश छात्र स्थायी साक्षरता प्राप्त किए बिना ही विद्यालय छोड़ देते हैं। बाह्य परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। यह अवरोधन भी दूसरे रूप में समय, धन तथा शक्ति का अपव्यय है। अपव्यय को दूर करने के लिए आवश्यक है कि छात्रों को निर्देशन दिये जायें।

2. सार्थक पाठ्यक्रम का चयन → सन 1935 में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में विविध पाठ्यक्रम का सुझाव दिया है। छात्रों में जब व्यक्तिगत विभिन्नता पायी जाती है, उनकी क्षमतायें, योग्यतायें, रुचियाँ समान नहीं होती, तो उनको एक ही पाठ्यक्रम का अध्ययन कराना उचित नहीं है। उस प्रतिवेदन के अनुसार कुछ

Scanned with CamScanner

Date
Page

आंतरिक आंतरिक विषय तथा इनके अतिरिक्त कुछ वैकल्पि विषय रखे गये है, जिनको 7 वर्गों मे विभाजित किया गया है इन वर्गों का चुनाव करना एक कठिन कार्य है। यहां विद्याल मे छात्रों को विषयों के चयन करते समय किसी प्रकार पथ-प्रदर्शन नही दिया जाता है। छात्रों को स्वयं के तथा पाठ्यक्रम के संबंध मे कोई ज्ञान नही होता है। वे नही है कि किस विषय का किस वृत्ति से संबंध है। छात्र अपने मा पिता के परामर्श से या स्वयं विषयों को चुन लेते है, जो उनको रुचिकर या सरल दिखते है। इस प्रकार वे गलत पाठ्य का चयन करते समय अपव्यय तथा अवरोधन की समस् को बढ़ाते है।

शैक्षिक उपलब्धि का वांछित स्तर बनाये रखना की आवश्य शिक्षालयों मे अध्ययन करने वाले छात्र अपने उपलब्धि स्तर को बनाये रखने अथवा उस स्तर मे वृद्धि करने दृष्टि से भी निर्देशन का लाभ उठा सकते है। वांछि शैक्षिक स्तर को तभी बनाये रखा जा सकता है जब छात्र एवं सहज एवं स्वभाविक रूप मे अधिगम क सके निर्देशन प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के उपलब्धि स के संबंध मे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा उन्हे यह बताया जा सकता है कि वे किन कार से संतोषजनक उपलब्धि करने मे सफल नही हो पा रहे है अथवा अधिगम से संबंधित अपनी उन विशेषताओं को उन्हे यथावत बनाये रखना चाहिए निर्देशन के माध्यम से अधिगम की सहज प्रक्रि अथवा सीखने की सहज एवं स्वाभाविक युक्ति से छात्रों को परिचित कराया जा सकता है। यह अत दुर्भाग्यपूर्ण है कि उद्देश्य मे निर्देशन सेवाओं की यथोचित आवश्यकता को अभी तक भी अनुभव नही जा सकता है। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि High School स्तर पर पाठ्यक्रम के चयन हेतु निर्देशन सेवाओं का प्रयोग नही किया जा रहा है। यह आवश्